आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:05-11-14

सारी सृष्टि चक्र के ड्रामा में अपने एक बार के पार्ट में ही हमारा बाप, टीचर और सतगुरु बन हमारी आत्मा को सर्व खजानों से भरपूर करने वाले, बेहद के बाप-टीचर-सतगुरु ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम बच्चों का श्रृंगार करने, सबसे अच्छा श्रृंगार है पवित्रता का.

बाबा ने हमें बताया है कि इस विश्व रंगमंच पर पार्ट बजाने वाली सर्व आत्माओं में से किसी भी आत्मा को एक ही पार्ट में, बाप, टीचर और सतगुरु ऐसे तीनों रोल नहीं मिल सकते. कोई आत्मा का बाप और टीचर का रोल एक ही पार्ट में हो सकता है लेकिन वह सतगुरु नहीं बन सकता. बाबा ही एक आत्मा है जिसे यह तीनों रोल एक ही पार्ट में संगम पर मिले हुए हैं. बाबा हमारी बाप बनकर पालना भी करता, टीचर बनकर पढ़ाता और सतगुरु बनकर सर्व वरदानों से श्रृंगार कर हमें साथ अपने घर भी ले जाता हैं. इस पूरे ड्रामा में सर्व आत्माओं में से किसी भी एक आत्मा को यह तीनों रोल एक साथ निभाने का पार्ट नहीं मिलता हैं. इसलिए जब हम बाबा को ऐसे कह कर याद करते है कि "बाबा, आप तो हमारे बाप भी हो, टीचर भी हो और सतगुरु भी हो." तो यह याद जरूर बाप तक पहुँचती हैं.

बाबा को तीनों रुपों से याद करने के लिए बाबा ने आज मुरली में कहे कुछ महा-वाक्यों को फिर से पढ़ेंगे.

- बाबा सबसे पहले बच्चों को कहते है कि यह भूलो नहीं की हम बाप के आगे, टीचर के आगे और सतगुरु के आगे बैठे हुए हैं. यह है अर्थ सहित याद करना.

- हमारा बाबा बेहद का बाप भी है, टीचर भी है और बरोबर हमारा सतगुरु भी है जो बच्चों को साथ में ले जायेगा.

- बाबा कहते है बच्चे कृष्णपुरी में जा तब सकेंगे जब बाबा को बाप, टीचर और सतगुरु के रुप में अर्थ सहित याद करते रहेंगे.

- आत्मा ही कहती है हाँ बाबा. बाबा आप तो सच कहते हो. बाबा आप हमारे बाप भी हो, पढ़ाने वाले टीचर भी हो और इस कंसपुरी से निकाल कृष्णपुरी में ले जाने वाले सच्चे सतगुरु भी हो.

- अभी हम जानते है पहले हम अपने रामराज्य में थे. फिर ८४ जन्मो के चक्र में आने से रावण राज्य में, दुख में आ गये. यह ज्ञान का चक्र चलाने से बाबा की याद जरूर आती है. परन्तु बाबा को हमें बाप, टीचर और सतगुरु तीनों रुपों से याद करना हैं.

- हमारा बाबा तो है ही निराकार. हमारी आत्मा का वह बाप भी बनते, टीचर और सतगुरु भी बनते हैं.

- बाबा हमें सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, बाद में सार में कहते है - बच्चे, बाप को याद करो. हमारा बाप, बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है. तीनों रुप में याद करने से हमें तीनों से वर्से मिलेंगे.

- वह बाबा हमारा बेहद का बाप भी है, बेहद का टीचर भी है और बेहद का सतगुरु भी है.

- वह बेहद का बाप है सुप्रीम. सुप्रीम तो एक ही है जिसको भगवान कहा जाता है. वह नॉलेजफूल है तो हमको नॉलेज सिखलाते है. बाप है ऊंच ते ऊंच तो पढ़ाई भी ऊंच ते ऊंच है. फिर वह सच्चा सतगुरु है तो हमें भी ऊंच ते ऊंच दुनिया का मालिक बनाता हैं.

वह बेहद का बाबा, अभी हमारा बाप बनकर हमारी पालना करते, टीचर बनकर पढ़ाते है और फिर सतगुरु बनकर हमारा गुणों और शक्तिओं से श्रृंगार कर अपने साथ भी ले जाते हैं.

ॐ शांति.